भोजकृत शृंगारमञ्जरीकथा में राग–विवेचन
(Published in UK Hindi Magazine "PURWAI" in April-June 2000 Issue)

— आयशा अनवर
शोध–छात्रा, संस्कृत विभाग,
अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय, अलीगढ़।

संस्कृत साहित्य में ग्यारहवीं शताव्दी में अनेक महान कवियों ने जन्म लिया। इन कवियों में बहुर्मुखी प्रतिभा से सम्पन्न महाराजा भोजदेव का अपना एक विशिष्ट स्थान है। सर्वगुणसम्पन्न भोजदेव जहाँ एक ओर प्रसिद्ध ऐतिहासिक राजा थे वहीं दूसरी ओर वे एक प्रकांड विद्वान भी थे। इस तथ्य का स्पष्टीकरण उनकी विविद्ध रचनाएँ हैं। इन रचनाओं में सरस्वतीकण्ठाभरण एवं शृंगारप्रकाश विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं। क्योंकि ये ग्रन्थ काव्यशास्त्रीय विवेचन की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। काव्यशास्त्रीय तत्वों के अन्तर्गत "राग" का अपना एक वैशिष्ट है। अतः प्रस्तुत लेख में भोज रचित शृंगारमञ्जरीकथा में उपलब्द्ध राग सम्बन्धी विषयों की चर्चा करना अभीष्ट है।

शृंगारमञ्जरीकथा गद्य साहित्य का एक ग्रन्थ है। गणिका पर आधारित इस ग्रन्थ में तेरह कथानिकाएँ हैं, अर्थात छोटी–छोटी कहानियाँ हें। ये कथाएँ प्रमुख रूप से विविद्ध प्रकार के रागों को स्पष्ट करती हैं।

"राग" शव्द का अर्थ (१) वर्ण, रंग रंजकवस्तु (२) लाल रंग लालिमा (३) प्रेम, कामभावना आदि हैं। प्रस्तुत लेख में यह शव्द प्रेम या कामभावना के अर्थ में लिया है। वात्स्यायन ने राग के विषय में कोई विशेष चर्चा नहीं की है, किन्तु केवल राग शव्द से परिचित कराया है कि राग प्रेम का ही पर्यायवाची शव्द है।[१] अग्नि–पुराण में राग को तीन प्रकार का वताया है हरिद्राराग, कुसुम्भराग एवं नीली राग।[२] साहित्यदर्पण में नीली राग, कुसुम्भ राग एवं मञ्जिष्ठा राग की परिभाषा भी प्राप्त होती है।

उनके अनुसार पूर्वराग तीन प्रकार का होता है। जो वाहरी चमकदमक तो न दिखाए परन्तु ह्रदय से कभी दूर न हो उसे "नीली राग" कहते हैं जैसे राम और सीता का राग। कुसुम्भराग शोभित वहुत होता है किन्तु जाता रहता है। एवं मञ्जिष्ठा राग शोभित भी होता है और जाता भी नहीं है।[३]

भोज ने शृंगारमञ्जरीकथा में वारह प्रकार के रागों पर चर्चा करते हुए उन्हें चार वर्गों में वाँटा है। जो निम्न हैं ः–

(१) प्रथम वर्ग	–	नीलीराग, रीतिराग, अक्षीवराग
(२) द्वितीय वर्ग	–	मञ्जिष्ठाराग, कषायराग, सकलराग
(३) तृतीय वर्ग	–	कुसुम्भराग, लाक्षाराग, कर्दमराग
(४) चतुर्थ वर्ग	–	हरिद्राराग, रोचनाराग, काम्पिल्यराग

भोज ने रागों के उपर्युक्त चारों वर्गों में से प्रत्येक वर्ग के केवल प्रथम राग का उल्लेख किया है। अर्थात प्रथम वर्ग से नीली राग, द्वितीय वर्ग से मञ्जिष्ठाराग, तृतीय वर्ग से कुसुम्भराग एवं चतुर्थ वर्ग से हरिद्राराग को समझाने के लिए एक-एक कथा का आश्रय लिया है। अब इन चार प्रमुख रागों को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है।

(१) नीली राग

नीलीराग से ग्रसित पुरुष अपने प्रेम की गहराई को नहीं छोड़ पाता, चाहे उसे कितनी ही कठिनाइयों से गुज़रना पड़े। शृंगारमञ्जरीकथा में नीली राग पर आधारित कथा इस प्रकार है –

कुण्डिनपुर नामक नगर में सोमदत्त नामक एक ब्राह्मण रहता था। उसका रविदत्त नामक एक पुत्र था। समय के साथ-साथ वह विभिन्न कलाओं में पारंगत हो गया। पिता ने पुत्र को प्रेमासक्ति से स्वयं को बचाने के लिए बहुतेरे उपदेश दिए। एक बार कामदेव की यात्रा-महोत्सव में जाने पर उसकी भेंट अपरिमित सौन्दर्यशाली विनयवती से हुई। रविदत्त विनयवती में आसक्ति से स्वयं को बचा कर न रख सका एवं उसमें लीन हो गया। विनयवती भी उससे बहुमूल्य आभूषण एवं स्वर्ण मुद्राएँ प्राप्त करती रही। कुछ समय बीतने पर रविदत्त से विमुख हो जाती है, किन्तु रविदत्त उसको भूल नहीं पाता। विनयवती के द्वारा घर से निकाल दिए जाने पर भी वह शेष जीवन इसी भरोसे गुज़ार देता है कि कभी-कभी विनयवती को देख सकेगा।

अतः इस कथा में विनयवती के द्वारा भर्त्सना एवं अवहेलना करने पर भी रविदत्त उससे विमुख नहीं होता। ऐसे पुरुष नीलीराग से ग्रसित होते हैं। जिस प्रकार नीलवर्ण का वस्त्र अनेक प्रयास करने पर भी नीलवर्ण से विलग नहीं होता उसी प्रकार नीलीराग से ग्रसित पुरुष भी अपने प्रेम की गहराई (आसक्ति) को नहीं छोड़ता।[४]

(२) मञ्जिष्ठाराग

मञ्जिष्ठाराग से ग्रसित पुरुष क्रमशः कान्तिहीन हो जाता है अर्थात समयानुसार वह अपने राग को त्याग देता है। मञ्जिष्ठाराग पर आधारित यह कथा संक्षिप्त में इस प्रकार है।

ताम्रलिप्ति नामक नगर में प्रतापमुकुट के शासन काल में राजकुमार विक्रमसिंह रहता था। वह अत्यन्त दानी, साहसी, दयालु, आदि अनेक मानवीय गुणों से ओत-प्रोत था। एक बार उसकी दृष्टि मालतिका नामक गणिका पर पड़ी।दिव्य सौन्दर्य से युक्त मालतिका पर विक्रमसिंह आसक्त हो गया। दुर्भाग्यवश उस समय मालतिका का सौदा वसुदत्त नामक एक व्यापारी के साथ तय हुआ था। यह जानते हुए भी कि विक्रमसिंह उससे प्रेम करता है मालतिका कुछ नहीं कर पाती है क्योंकि उसे एक निश्चित अवधि तक के लिए वसुदत्त (व्यापारी) के पास रहना था। अतः कुछ समय तक तो विक्रमसिंह मालतिका के

पास जाता रहा एवं उसको वहुमूल्य आभूषण एवं वस्त्र देता रहा, किन्तु शीघ्र ही वह किसी कारण ही मालतिका से विमुख हो गया।

इस कथा का नायक मञ्जिष्ठाराग से युक्त है। वह अधिक समय तक मालतिका की प्रतीक्षा नहीं कर सका एवं कतिपय दिनों में ही उसका राग क्षीण हो जाता है। जिस प्रकार से मञ्जिष्ठा वस्त्र जल में शीघ्र ही घुल जाता है एवं अपना वास्तविक रंग खो देता है उसी प्रकार से मञ्जिष्ठाराग से ग्रसित पुरुष भी शीघ्र ही राग विमुख हो जाता है।[५]

(३) कुसुम्भराग

कुसुम्भराग से युक्त पुरुष को यदि विरक्ति हाथ लगती है तो वह अनर्थ कर डालता है। अतः इस राग को वनाए रखना चाहिए। कुसुम्भराग का स्पष्टीकरण इस कथा द्वारा होता है।

विदिशा नामक नगरी में कुवलयावली नामक एक गणिका अपनी माता भुजंगवागुरा के साथ रहती थी। कुवलयावली का मुख्य उद्देश्य धन अर्जित करना था, अतः वेश्यावृत्ति से वह अपना जीवन निर्वाह करती थी। एक वार माधव नामक एक व्राह्मण से उसकी भेंट हुई। कुवलयावली ने द्यूत–क्रीड़ा का आयोजन किया। द्यूत–क्रीड़ा में कुवलयावली माधव का सम्पूर्ण धन प्राप्त कर लेती है। धन से पूर्णतः वंचित किए जाने पर माधव समझ लेता है कि अव कुवलयावली उसे निकाल देगी। अतः वह एक चाल चलता है। उसने कुवलयावली के समक्ष मलय पर्वत पर जाकर वहाँ से धन लाने की वात रखी। कुवलयावली दुःखी होती है। चिन्ह स्वरूप माधव का एक मात्र परिधान माँगती है। माधव उसके इस लोभ को समझ लेता है। थोड़ी दूर जाकर माधव कुवलयावली के नाक कान काटकर उससे कहता है कि "चिन्ह स्वरूप सदैव शाश्वत रहने वाला तुम्हारा यह पुरस्कार है। इस प्रकार तुम मुझे सदैव याद रख सकोगी।"

इस कथा में माधव कुसुम्भराग से युक्त दर्शाया गया है। जिस प्रकार से कुसुम्भवर्ण वाला वस्त्र गर्मी तथा प्रक्षालन नहीं सहन कर पाता उसी प्रकार कुसुम्भराग से युक्त पुरुष विरक्ति की दशा में अनर्थ कर डालता है। जैसा कि माधव ने कुवलयावली के साथ किया।[६]

(४) हरिद्राराग

हरिद्राराग से युक्त पुरुष के साथ कठोरता का व्यवहार नहीं करना चाहिए। उनके साथ कड़ा व्यवहार करने पर उनका राग क्षीण हो जाताा है। प्रस्तुत कथा हरिद्राराग पर आधारित है।

हस्तिग्राम नामक नगर में सूरधर्मा नामक एक व्राह्मण रहता था। वंशक्रमानुसार वह अत्यन्त निर्धन था। अपनी निर्धनता से दुःखी होकर वह समुद्र किनारे जाकर समुद्र की पूजा करने लगा। समुद्र उसकी पूजा एवं लगन से प्रसन्न होकर उसे एक वहुमूल्य रत्न देता है। उस रत्न की सुरक्षा के लिए सूरधर्मा अपनी जांघ चीरकर उसमें रख लेता है। एक वार घूमते हुए उसकी भेंट देवदत्ता नामक गणिका से होती है।

देवदत्ता उसे देखकर समझ जाती है कि निश्चित ही कोई रहस्य है जिसे वह छिपा रहा है। अधिक समय तक सूरधर्मा के साथ रहने पर भी देवदत्ता इस रहस्य को जान न सकी। देवदत्ता ने सम्पूर्ण वृतान्त जानने के लिए यह चाल चली। पहले से ही तय उसकी दो सहेलियाँ सूरधर्मा के पास बात करती हुई गुज़रीं। वे बात कर रहीं थी कि "सूरधर्मा नामक एक ब्राह्मण पर हमारी मित्र देवदत्ता अत्यन्त आसक्त है। उसने उसके विरह में जान दे दी। अब उसके परिवार का भरण पोषण करने वाला कोई नहीं है। अतः वे भी शीघ्र ही मर जाएगें। ऐसा सुनते ही सूरधर्मा ने झट अपनी जाँघ चीरकर उस अनमोल रत्न को देवदत्ता की माता को दे दिया। रत्न प्राप्त होते ही वह मृत्युशय्या से एसा दर्शाती हुई उठ बैठी कि उसे पुनर्जीवन प्राप्त हुआ है एवं वह कुछ दिन तो उसके साथ रही। थोड़ा समय बीतने पर देवदत्ता सूरधर्मा को तिरस्कृत कर घर से निकाल देती है।[७]

इस कथा का नायक हरिद्रााग से युक्त दर्शाया गया है। हरिद्रााग से युक्त पुरुष को विभिन्न उपायों से छला जाता है। जिस प्रकार सूर्य ताप से हरिद्रवर्ण क्षीण हो जाता है उसी प्रकार तर्जन आदि से पुरुष राग भी क्षीण हो जाता ह।

इस प्रकार भोज ने शृंगारमञ्जरीकथा में मुख्य रूप से नीलीराग, मञ्जिष्ठाराग, कुसुम्भराग एवं हरिद्रााग पर ही चर्चा की है। उन्होंने प्रथम वर्ग के रीति एवं अक्षीव राग को नीलीराग के अन्तर्गत माना है। कषाय एवं सकलराग को मञ्जिष्ठाराग के अन्तर्गत, लाक्षा एवं कर्दमराग को कुसुम्भराग के अन्तर्गत तथा रोचन एवं काम्पिल्यराग को हरिद्रााग के अन्तर्गत माना है।

भोज ने अपने ग्रन्थ शृंगारप्रकाश के **३६**वें अध्याय में इन्हीं रागों का विशद विवेचन किया है। शृंगारमञ्जरीकथा में आई हुई इन विभिन्न कथाओं में वर्णित इन विभिन्न प्रकार के रागों के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सम्भवतः भोज ने शृंगारमञ्जरीकथा की रचना इन्हीं रागों को चित्रवत स्पष्ट करने के लिए ही की है। शृंगारमञ्जरीकथा एवं शृंगारप्रकाश ये दोनो ग्रन्थ एक दूसरे के पूरक प्रतीत होते हैं।

सन्दर्भ

१. वात्स्यायन, कामसूत्र, II ,१, ६४।
रसो रतिः प्रातिर्भावो रागो वेगः समाप्तिरीति रतिपर्यायाः।

२. अग्निपुराण, कामसूत्र, पृ० ५५३, श्लोक २५।
हारिद्रश्चैव कुसुम्भो नीलीरागश्च स त्रिधा।
वैशेषिकः परिज्ञेयो यः स्वलक्षणगोचरः।।

३. विश्वनाथ, साहित्यदर्पण, **३.१९५.१९६,१९७**
नीली कुसुम्भ मञ्जिष्ठा पूर्वरागोऽपि च त्रिधा।
न चीतिशोभते यन्नापैति प्रेम मनोगतम्।

तन्नीलीरागमाख्यातं यथा श्री रामसीतयो।।
कुसुम्भरागं तत्प्राहुर्यदपैति च शोभते।
मञ्जिष्ठारागमाहय्स्तद् यन्नापैत्यतिशोभते।।

४. भोज, शृंगारमञ्जरीकथा, प्रथम रविदत्त कथानिका, पृ० २६,
यथा हि नीलरक्तं वासे नानाप्रकारैः क्षारादिभिः क्षाल्यमानमपि
न निजरागमुज्झ त्येवं नीलीरागः पुरुषोऽपि शतशः शकलीक्रियमाणोऽपि न निविडरागितां परित्यजति।

५. भोज, शृंगारमञ्जरीकथा, द्वितीय विक्रमसिंह कथानिका, पृ० २८,
सर्वस्वाहरणादि पीडनं.....यो विहितेऽप्यस्मिन् यद्याप्यसौ न विरज्यते तथापि विच्छायतां भजाति, अतो नातिपीडनीयः

६. शृंगारमञ्जरीकथा, तृतीय माद्यक कथानिका, पृ० ३०,
रक्ता अपि खिद्यमाना विरज्यन्ते तदेवंविधा कुसुम्भरागा विज्यन्ते अनर्थाय च भवन्ति। तस्मात् कुसुम्भरागो नियतमपीडय-दिर्विराग कारणनानि रक्षयदिरविरज्यन्नेव विश्रावणीयः। यथा कुसुम्भरक्तं वासस्तासपप्रक्षालनादिसहं न भवति एवं कुसुम्भरागोऽपि।

७. शृंगारमञ्जरीकथा, चतुर्थ सूरधर्म कथानिका, पृ० ३५,
हरिद्रारागे पुंसि विना खेदैर्विशिष्टतरोपायैराशुविज्ञश्रावणमेव ज्ञेयः यथा हि सूर्यतापादिभिर्हरिद्रा रागोऽपिपक्षीयते एवं हरिद्रारागे विशिष्टोपायैराशु विश्रावणीय इति।